5+ हिंदी

Disclaimer:

Arshad Basheer madani ke urdu books ko Roman English mai lane wale ahbab Mubarakbadi ke mustahiq hai ke unoun ne asan kia urdu reading Na janne Waloun ke liye

الحمد لله

فجزاكم الله خيرا

Note : arshad basheer madani ne Word to Word check nahi kia Kiunke bohut books ko roman Kia gaya un sab ko Check karna asan nahi, time ka commitment deegar Urdu books Aur syllabus par laga huva hai is liye badi mazirat ke sat arz hai ke jahan kahin apko pronunciation ya talaffuz mai Diqqat lage Urdu Janne Waloun se asal Kitab ki taraf rujoo farmaen in sha Allaah in sha Allaaah

Askislampedia ki Team ka shukriya ke Roman mai book lane mai madad faramee

Khas tour se

Riaz bhai , shaikh abdullah Umeri, faheem iqbal , Mushtaq ahmed Aur baz sisters bhi hain jo madad kie Aur kuch brothers bhi madad kie Likin ijazat nahi hai ke unka naam zikr Kia jae Allaah qabool farmae sab ki mahant

****

Ameen

Shukriya

Shoba e nashro ishaat,

Askislampedia

मुकद्दमा

इस्लामिक स्टडीस दर असल नौ न्नाहालन उम्मत की एक मांग थी जो अल्लाह के फज़ल और तौफीख से पाए तकमील को पहुंची| बिला शक व शुबा ये किताब हर घर और हर फर्द की ज़रुरत है| अल्लाह ताला इस अमल मुतवाज़ेह को क़ुबूल फरमाये|

मराहिल नज़रिया, निसाब :

दीन ए इस्लाम बहुत ही आसन और खैर ख्वाही पर मबनी दीन है, लेकिन इसके बावजूद जदीद नसल अपने दीन से दूर होती जा रही है| हमारी ये ख्वाहिश थी के आसान फहम अंदाज़ में बच्चों तक इल्म ए दीन पहुँचायें| इसी मकसद के पेशे नज़र अलहम्दु लिल्लाह ये दीनी निसाबी किताबी सिलसिला शुरू किया गया है|

मराहिल तय्यारी निसाब :

ऐसी किताब की ज़रुरत थी जिसमे कुरआन ए मजीद की मुख़्तसर सूरतों, छोटी छोटी और जामे अहादीस, किसस,

नसीहतों, आदाब व अज्कार और साथ ही तजवीद के कवायिद से जिस किताब को मज़ीन किया गया हो|

ये किताबी सिलसिला बच्चों की उमर के लेहाज़ से तरतीब दिया गया है| पहले मरहले में पाँच त नौ साल के बच्चों के लिए तालीमात देने को तरतीब दिया गया| इन शा अल्लाह इस सिरीज़ को 23 + तक ले जाने का इरादा है|

ये किताब किस के लिए :

इन शा अल्लाह इस सिरीज़ से मंदरजा ज़ेल शोबे व अफराद इस्तेफ़ादा हासिल कर सकते है :

1. **ये किताब न सिर्फ बच्चों बलके हर किसम के अफराद के लिए मुफीद है जो इस्लामी तालीमात सीखने की बेहतरीन शुरुआत करना चाहते है|**
2. **डाक्टर्स के लिए भी मुफीद है जो नबवी तालीमात की रौशनी में नबवी तर्ज़े ज़िन्दगी अपना कर सहत्मंद ज़िन्दगी आम करना चाहते है|**
3. **ये किताब टीचर्स के लिए बड़ी मुफीद है, जो दर्स के दौरान बच्चों को दीनी आदाब सिखाना चाहते है|**

4. **ये किताब उन स्कालर्स व दुआत के लिए जो हवाले देने का एहतेमाम करते है काफी मुफीद है क्यों के इसमें बुनयादी तालीमात हवालों के साथ मौजूद है|**
5. **ये किताब सोशल वरकर्स के लिए भी मुफीद है जो नबवी तालीमात के ज़रिये समाज में सुधार लाना चाहते है|**
6. **ये किताब पोलिस और वुकला के लिए भी ज़रूरी है जो जरायेम की रोकथाम करना चाहते है| इसका बेहतरीन तरीका ये है के नबवी तालीमात को आम कर दिया जाये|**
7. **बूढ़े हज़रात जिन्होंने अब तक शुरुआत न की हो लेकिन retirement age बाद बेहतरीन शुरुआत करना चाहते है, ये किताब उनके हक में भी काफी मुफीद है|**
8. **रीसर्च स्कालार्स के लिए जो बच्चों की तरबियत का एहतेमाम करते है|**
9. **सैकालजिस्ट के लिए जो बच्चों की सैकालजी पढ़ना चाहते है|**
10. **मुस्लिहीन व मुकातिब के मुदीर व मस्जिद के मुहतमीन जो बच्चो के लिए सबाही व मसाही हल्खे खायम करते है, इनके लिए ये सिरीज़ syllabus की हैसियत रखती है|**

11. असरी इस्लामिक स्कूल के लिए उमर के ऐतेबार से classes में रखा जा सकता है|
12. सेक्युलर स्कूल्स में मसाई हल्खे के लिए|
13. इस्लामी मदारिस के लिए भी मुफीद है|
14. खतीब हज़रात जो कम वक़्त में अहादीस के सही हवाले नक़ल करना चाहते हो|
15. घरों में मायें जो खुद याद करना और बच्चों को याद कराना चाहती हो|
16. नानी, दादी, नाना, दादा अपने नवासो और पोतो को आयत व अहादीस याद कराना चाहते हो|
17. इन शा अल्लाह ये किताब हर किस्म के लोगो पर असर करेगी|

मराहिल मराजा आम :
इस किताब की तय्यारी के बाद दीनियात के माहरीन उलमा एकराम से मुराजा कराया गया जो दीनी उलूम और बच्चो की नफ्सियात से वाकिफ है|

मराहिल मराजा ख़ास : इस किताब को मज़ीद मुन्खा और मुनज्ज़म बनाने के लिए फिर एक मरतबा खुसूसी मराजा

किया गया, जिसमे पाँच उलमा की एक कमिटी तरतीब देकर मुकम्मिल बारीकी से जाएज़ा लिया गया| कुरआन का तरजुमा, आदाब व अहादीस के हवाले जात, इस्लामी सवाल व जवाब और दीगर अनावीन पर काफी गहराई से जाएज़ा लिया गया| उम्मीद के कोई कमी बाकी नहीं रखी गयी फिर भी ऐब से पाक तो सिर्फ अल्लाह की ज़ात है, बशर होने के नाते कुछ खामियां रह गयी हो तो इत्तेला देकर मामनू होने का मौका दे|

मराहेल तकमील :

अल्हम्दुलिल्लाह ये किताब पाए तकमील को पहूंच चुकी है| जो नए नसल को अपने दीन से करीब करने का अहम् ज़रिया बन सकती है| हम उम्मीद करते है के इस से बच्चो को खातिर ख्वाह फ़ायदा होगा| घर में इस्लामी माहौल पैदा करने में मदद मिलेगी, इन शा अल्लाह|

इस मौके पर मैं उन सब हज़रात का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ जिनका निसाब की तय्यारी में मुकम्मिल साथ रहा जैसे शेख अब्दुल्लाह उमरी, शेख अब्दुर रहमान उमरी मदनी, शेख नूरुद्दीन उमरी, शेख उस्मान उमरी, शेख माजिद उमरी, शेख मुजाहिद उमरी, शेख अब्दुल वासे

उमरी, जनाब ज़बिउल्लाह और साथ ही बिरादर मंसूर, फहीम भाई, मुश्ताख भाई, बिरादर इमाद, नसरीन बिन्ते हसन ज़ौजह अरशद बशीर मदनी, आस्क इस्लाम पीडिया की सारी टीम, ARAS Printer और सारे मुहिसनीन वगैरह|

मैं इस मौके पर अपने मादरे इल्म जामिया दारुस सलाम उमराबाद, तमिलनाडु, इंडिया को कैसे भूल सकता हूँ जिसके साए आतिफ़त में रहकर तालीम व तरबियत पाने का हसीन मौका मिला| इसी तरह जामिया इस्लामिया मदीना मुनव्वरह, सौदी अरब को भी फरामोश नहीं कर सकता, जिसके मज़ाब व नामवर असातेज़ा की तरबियत में ज़हन की एक एक कड़ी खुलती गयी| अल्लाह ताला हमारे और उन सब के मीज़ान हिसाब को सखील फरमा दे - आमीन| मैं दुआ गो हो के रब्बे करीम हमारी इस छोटी सी काविश को क़ुबूल फरमा ले, जदीद नसल अपने दीन से आशना हो और इस्लामी तालीमात को अपनी ज़िन्दगी में ढाल सके - आमीन|

वस्सलाम

अरशद बशीर उमरी मदनी

फउंडर एंड डैरक्टर

आस्क इस्लाम पीडिया

नोट :

1. **तरबियत औलाद शरीके हयात के इंतेखाब के वक़्त से शुरू हो जाती है| यही से हुस्ने तरबियत का आग़ाज़ हो जाता है| जब सलाहियत की बुनियाद पर फैसला किया जाता है|**
2. **तौहीद, रिसालत और आखिरत की बुनियाद पर ही नबी ﷺ ने सहाबा एकराम और नयी नसल की तरबियत की|**
3. **किताब व सुन्नत फहम सहाबा एकराम की रौशनी में तरबियत की जाये|**

   नोट : अहादीस के मामले में अल्हम्दुलिल्लाह सहत का ख़ास ख़याल रखा गया है| जो अहादीस भी इस किताब में ज़िकर की गयी है वो सब मख्बूल (सही, हसन) ही है - अल्हम्दुलिल्लाह !

इंडेक्स

टॉपिक **पेज नंबर**

1. **सूरतें** **12**
2. **अहादीस** **18**
3. **आदाब और दुआयें** **24**
4. **नसीहतें** **37**
5. **खिसस** **40**
6. **दीन ए इस्लाम की अहम् और बुनयादी तालीमात** **48**
7. **सवालात** **55**
8. **मुअल्लिम गैड** **60**

वालिदैन के लिए कुछ नसीहतें

नेक और सालेह औलाद तलब करने की दुआयें :

रब्बि हब ली मिनस्सालिहीन - (अस साफ्फात : 100)
ऐ मेरे रब ! मुझे नेक-बख्त औलाद अता फरमा|

रब्बि हब ली मिल्लदुन्क ज़ुर्रिय्यतु तय्यिबतन इन्नक समी उद दुआ - (आले इमरान : 38)

ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझे अपने पास से पाकीज़ह औलाद अता फरमा, बेशक तू दुआ का सुनने वाला है|

रब्बना हब्लना मिन अज्वाजिना व ज़ुर्रिय्यतिना खुर्रत आयुन वज अल्ना लिल मुत्तकीन इमामा - (अल फुरखान : 74)
ऐ हमारे परवरदिगार ! तू हमें हमारी बीवियों और औलाद से आँखों की ठंडक अता फरमा और हमें परहेज़गारो का पेशवा बना|

रब्बिज अल्नी मुकीमस्सलाती व मिन ज़ुर्रिय्यती रब्बना तकब्बल दुआ - (इब्राहीम : 40)
ऐ मेरे पालने वाले ! मुझे नमाज़ का पाबन्द रख और मेरी औलाद से भी, ऐ हमारे रब मेरी दुआ क़ुबूल फरमा|

अपने बच्चो को नज़रे बद और शैतान के शर से हिफाज़त में रखने के लिए ये दुआ उन पर पढ़ कर दम करें

अऊज़ु बि कलिमातिल्लाहित्ताम्मह, मिनकुल्ली शैतानिव व हाम्मह, व मिन कुल्लि ऐनिल लाम्मह - (सहीह बुखारी : 3371)

मैं पनाह मांगता हूँ अल्लाह के पूरे कलीमात के ज़रीये, हर शैतान से, हर ज़हरीले कीड़े (सांप, बिच्छू वगैरा) से और हर नज़रे बद वाली आँख से|

अपनी औलाद को कतल न करें :

वला तख्तुलू औलादकुम खश्यत इम्लाख नह्नु नरज़ुकुहुम व इय्याकुम इन्न खत्लहुम कान खितअन कबीरा - (बनी इसराईल : 31)

और मुफलिसी के खौफ से अपनी औलाद को न मार डालो, उनको और तुम को हम ही रोज़ी देते है| यकीनन उनका कतल करना कबीरा गुनाह है|

व इज़ल मौऊ दतु सुइलत, बि अय्यि ज़म्बिन खुतिलत - (तक्वीर : 8)

और जब ज़िन्दा गाडी हुई लड़की से सवाल किया जायेगा के किस गुनाह की वजह से वो कतल की गयी?

छोटे बच्चो से आप ﷺ का हंसी मज़ाख करना भी साबित है

arabic text (सहीह बुखारी : 77)

महमूद बिन अर-रबी रज़िअल्लाहुअन्हु फरमाते है : मुझे याद है के एक मरतबा रसूलुल्लाह ﷺ ने एक डोल से मूह में पानी लेकर मेरे चेहरे पर कुल्ली फरमाई, और मैं उस वक़्त पाँच साल का था|

लड़कियों की खुसूसी परवरिश पर फ़ज़ीलत :

arabic text (सुनन इब्न माजह : 3669, सहीह)

उखबह बिन आमिर रज़िअल्लाहुअन्हु कहते है के मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते सुना : जिस शख्स की तीन बच्चियां हो और वो साबित कदमी के साथ उन्हें मेहनत करके खिलाई पिलाई और पहनाई तो वो उसके लिए जहन्नम से रूकावट बन जाएगी|

बच्चो को नमाज़, रोज़े और दीगर इबादत की आदत डालें :

arabic text (सुनन अबू दावूद : 495, सहीह)

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल-आस रज़िअल्लाहुअन्हु कहते है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जब तुम्हारी औलाद सात

साल की हो जाये तो तुम उनको नमाज़ पढने का हुकुम दो, और जब वो दस साल के हो जाये तो उन्हें इस पर (यानी नमाज़ न पढने पर) मारो, और उनके सोने के बिस्तर अलग कर दो|

arabic text (सहीह बुखारी : 1960)
रबी बिन्ते मुअव्विज़ रज़िअल्लाहुअन्हु ने कहा के फिर बाद में भी (रमजान के रोज़े की फरज़ियत के बाद) हम उस दिन रोज़ा रखते और अपने बच्चो से भी रखवाते थे| उन्हें हम ऊन का एक खिलौना देकर बहलाया रखते| जब कोई खाने के लिए रोता तो वही दे देते, यहाँ तक के इफ्तार का वक़्त आ जाता|

arabic text (सुनन नसाई : 2648)
अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़िअल्लाहुअन्हु कहते है के एक औरत ने एक बच्चे को नबी ﷺ के सामने उठाया और पूछने लगी : क्या इसका भी हज है? आप ने फ़रमाया : हाँ (इसका भी हज है) और तुम्हे इसका अज्र मिलेगा|

बच्चो को इस्लामी आदाब सिखातें रहे :

arabic text (सहीह बुखारी : 5376)

उमर बिन सलमा रज़िअल्लाहुअन्हु बयान करते है के मैं बच्चा था और रसूल ﷺ की परवरिश में था और खाते वक़्त मेरा हाथ बरतन में चारो तरफ घूमा करता| इसलिए आप ﷺ ने मुझ से फ़रमाया के बेटे ! बिस्मिल्लाह पढ़ लिया करो, दाहिने हाथ से खाया करो और बरतन में वहां से खाया करो जो जगह तुझ से नज़दीक हो| चुनाचे उसके बाद मैं हमेशा उसी हिदायत के मुताबिख खाता रहा|

मरने के बाद भी औलाद काम आने वाली है अगर उनकी अच्छी तरबियत की जाये :

arabic text (सुनन नसाई : 3681, सुनन अबू दावूद : 2880, सुनन तिरमिज़ी : 1376, सहीह)

अबू हुरैरह रज़िअल्लाहुअन्हु कहते है के रसूल ﷺ ने फ़रमाया : जब इन्सान मर जाता है तो उसके अमल का सिलसिला बंद हो जाता है, सिवाए तीन चीजों के : एक सद्खे जारिया है, दूसरा ऐसा इल्म है जिससे लोग फ़ायदा उठाते और तीसरा नेक व सालेह औलाद है जो उसके लिए दुआ करे|

औलाद के दरमियान इंसाफ करें :

arabic text (सुनन अबू दावूद : 3544, सुनन नसाई : 3717, सहीह)

नोमान बिन बशीर रज़िअल्लाहुअन्हु कहते है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : अपनी औलाद के दरमियान इंसाफ किया करो, अपने बेटो के हुखूख की अदायगी में बराबरी का ख्याल रखा करो| (किसी के साथ न इंसाफी और ज्यादती न हो)|

चैप्टर 1

सूरह

सूरह अल फ़ातिहा

सूरह अल इखलास

सूरह अल फलख

सूरह अन नास

सूरह अल फातिहा

(1) **सब तारीफ़ अल्लाह ताला के लिए है जो तमाम जहानों का पालने वाला है|**

(2) **बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है|**

(3) **बदले के दिन यानी क़ियामत के दिन का मालिक है|**

(4) **हम सिर्फ तेरी ही इबादत करते है और सिर्फ तुझ ही से मदद चाहते है|**

(5) **हमें सीधी और सच्ची राह दिखा|**

(6) **उन लोगो की राह जिन पर तू ने इनाम किया|**

(7) **उनकी नहीं जिन पर ग़ज़ब किया गया और ना गुमराहो की|**

सूरह अल इखलास

1. **आप कह दीजिये के वो अल्लाह ताला एक ही है|**
2. **अल्लाह ताला बे-नियाज़ है|**
3. **ना उससे कोई पैदा हुआ ना वो किसी से पैदा हुआ|**
4. **और ना कोई उसका हंसर है|**

सूरह अल फलख

1. **आप कह दीजिये के मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूँ|**
2. **हर उस चीज़ के शर से जो उसने पैदा की है|**
3. **और अंधेरी रात की तारीकी के शर से जब उसका अंधेरा फ़ैल जाये|**
4. **और गिरह लगा कर उनमे फूंकने वालियों के शर से भी|**
5. **और हसद करने वाले की बुराई से भी जब वो हसद करे|**

सूरह अन नास

1. **आप कह दीजिये के मैं लोगो के रब्ब की पनाह में आता हूँ|**
2. **लोगो के मालिक की|**
3. **और लोगो के माबूद की पनाह में,**
4. **वसवसा डालने वाले, पीछे हट जाने वाले के शर से**
5. **जो लोगो के सीनों में वसवसा डालता है**
6. **ख्वाह वो जिन्न में से हो या इन्सान में से|**

चैप्टर 2

सहीह हदीस

1. इन्नमल आमालू बिन्नियात
आमाल का दारोमदार निय्यतों पर है| (सहीह बुखारी : 1)

2. अद्दीनु अन-नसीहाह
दीन खैर-ख्वाही का नाम है| (सहीह मुस्लिम : 55)

3. अत्ताहूरु शत्रुल ईमान
पाकी ईमान का हिस्सा है| (सहीह मुस्लिम : 223)

4. अस्सलातु नूर
नमाज़ नूर है| (सहीह मुस्लिम : 223)

5. अलमुस्लिमु अखुल मुस्लिम

एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है| (सहीह बुखारी : 2442, सहीह मुस्लिम : 2564)

6. एह्फाज़ लिसानक

अपनी ज़ुबान की हिफाज़त करो| (सहीह बुखारी : 5376, सहीह मुस्लिम : 2022)

7. ला तहासदू

आपस में हसद ना करो| (सहीह मुस्लिम : 2559)

8. ला तघ्ज़ब

गुस्सा ना करो| (सहीह बुखारी : 6116)

9. अत-तियारतु शिर्कुन

बद्शुग्नी शिर्क है| (सुनन अबी दावूद : 3910)

10. कुल्लु बिद अतिन ज़लालह

हर बिदत गुमराही है| (सहीह मुस्लिम : 867)

चैप्टर 3

इस्लामी आदाब और दुआयें

1. मुलाक़ात के वक़्त सलाम करे :

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातुहू
आप पर सलामती हो, अल्लाह की रहमतें और उसकी बरकतें हो| (नूर : 61, सुनन तिरमिज़ी : 2699)

2. सलाम का जवाब इस तरह दे :
व रहमतुल्लाही व बरकातुहू
आप पर भी सलामती हो, अल्लाह की रहमतें और उसकी बरकतें हो| (निसा : 86)

3. खाना खाते वक़्त (या कोई भी काम शुरू करते वक़्त) की दुआ :

बिस्मिल्लाह

शुरू अल्लाह के नाम से (सुनन तिरमिज़ी : 1858)

4. खाने के बाद (यानी किसी भी काम के ख़तम होने पर) की दुआ :
अलहम्दुलिल्लाह
तमाम तारिफात अल्लाह के लिए है| (सुनन तिरमिज़ी : 3458)

5. कलिमे तय्यिबा :
ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह
नहीं है कोई माबूद ए बरहक़ सिवाए अल्लाह के| मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल है| (सहीह मुस्लिम : 33)

6. कोई चीज़ अच्छी लगे तो ये कहें :
अल्लाहु अकबर
अल्लाह सब से बड़ा है| (अल बखरह : 185)

माशा अल्लाह

जो अल्लाह ताला चाहे| (अल कहफ़ : 39)

सुबहानल्लाह
अल्लाह ताला पाक है| (सहीह बुखारी : 3471)

बारकल्लाह
अल्लाह बरकत दे| (सहीह इब्ने हिब्बान : 6105)

7. आप की कोई मदद करे तो आप ये दुआ दें :

जज़ाकल्लाहु खैरन
अल्लाह आप को अच्छा बदला दे| (सहीह इब्ने हिब्बान : 7279)

व अन्तुम फ-जज़ा-कुमुल्लाहु खैरन
और आप को भी अल्लाह अच्छा बदला दे| (सहीह इब्ने हिब्बान : 7279)

8. मग़फिरत की दुआ :

अस्तग़फिरुल्लाह
मैं अल्लाह से बख्शिश तलब करता हूँ| (सहीह मुस्लिम : 591)

9. सोते वक़्त की दुआ :
अल्लाहुम्म बिस्मिक अमूतु व अह्या
ऐ अल्लाह मैं तेरे नाम से मरता और जीता हूँ| (सहीह बुखारी : 6314)

10. नींद से बेदार होते वक़्त की दुआ :
अलहम्दु लिल्लाहिल-लज़ी अह्याना बादमा अमातना व इलैहिन-नुशूर
तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए जिसने हमें मरने के बाद ज़िन्दा किया और उसी की तरफ लौट कर जाना है| (सहीह बुखारी : 6314)

11. बैतुल खला जाते वक़्त की दुआ :
अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिनल खुबुसी वल खबाइस

ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ खबीस जिन्नों और जिन्नियों से| (सहीह बुखारी : 142)

12. बैतुल खला से निकलते वक़्त की दुआ : घुफ़रानक
ऐ अल्लाह मैं तुझ से बख्शिश चाहता हूँ|
(सुनन तिरमिज़ी : 7)

चैप्टर 4
नसीहतें

1. और इब्राहीम ने अपने बेटो को इसी बात की वसीयत की और याखूब ने भी (अपने फ़रज़न्दो से यही कहा) के बेटा अल्लाह ताला ने तुम्हारे लिए यही दीन (दीन ए इस्लाम) पसंद फ़रमाया है तो मरना है तो मुसलमान ही मरना| (बखरह : 132)
2. अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहुअन्हु फरमाते है के मैं एक मरतबा (सवारी पर) नबी

करीम ﷺ के पीछे बैठा था तो आप ने फ़रमाया : ऐ लड़के मैं तुम्हे चंद बातें सिखाता हूँ, वो ये के :

हमेशा अल्लाह को याद रखो, वो तुम्हे महफूज़ रखेगा|

अल्लाह ताला को याद रखो, उसे अपने सामने पाओगे|

जब मांगो तो अल्लाह ताला ही से मांगो|

और अगर मदद तलब करो तो सिर्फ उसी से मदद तलब करो|

और जान लो के अगर पूरी उम्मत इस बात पर मुत्तफिख हो जाये के तुम्हे किसी चीज़ में फ़ायदा पहुँचायें तो भी वो सिर्फ इतना ही फ़ायदा पहुंचा सकेंगे जितना अल्लाह ताला ने तुम्हारे लिए लिख दिया है|

और अगर तुम्हे नुक्सान पहुँचाने पर इत्तेफाक करले तो हरगिज़ नुक्सान नहीं पहुंचा सकते मगर वो जो अल्लाह ताला ने तुम्हारे लिए लिख दिया|

इसलिए के कलम उठा दिए गए और सहीफे खुश्क हो चुके| (तिरमिज़ी : 2516)

चैप्टर 5
खिसस

इल्म की दौलत

अल्लाह ताला ने आदम अलैहिस्सलाम को अपने हातों मिट्टी के ज़रिये पैदा किया, और उनमे रूह फूंकी, जिससे वो चलता फिरता इन्सान बन गये| ये पहले इन्सान थे, इसलिए इनका लखब अबुल बशर भी है|

फ़रिश्ते जो अल्लाह ताला की एक नूरानी मख्लूख है, अपने सामने आदम अलैहिस्सलाम को बनता देखते और अल्लाह से पूछा करते के, ऐ अल्लाह, आप इसे क्यों पैदा कर रहे है? क्या हम आपकी इबादत के लिए काफी नहीं? अल्लाह ताला फरमाते है : मैं वो जानता हूँ जो तुम नहीं जानते| अल्लाह ताला ने आदम

अलैहिस्सलाम को पैदा करने के बाद हर चीज़ का इल्म सिखाया|

अल्लाह ताला ने एक मौके पर फरिश्तों से कहा तुम इन चीज़ों के बारे में जानते हो तो बताओ? फरिश्तों ने कहा, ऐ अल्लाह हम उतना ही जानते है जितना तू ने हमें सिखाया| अब अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम से कहा तुम इन चीज़ों के बारे में बताओ, आदम अलैहिस्सलाम तमाम चीज़ों के बारे में बता दिए| तब अल्लाह ताला ने फरिश्तों को हुकुम दिया के तुम आदम अलैहिस्सलाम को सजदा करो, तमाम फरिश्तों ने आदम अलैहिस्सलाम को सजदा किया|

इस तरह अल्लाह ताला ने आदम अलैहिस्सलाम को तमाम मख्लूखात पर फ़ज़ीलत बख्शी, इसी लिए अल्लाह के रसूल मुहम्मद ﷺ ने भी फ़रमाया है के इल्म का हासिल करना हर मुसलमान पर फर्ज़ है| (सूरह बखरह : 30-34 का खुलासा)

वाखिया एक बाग़ की खैरात का

अनस रज़िअल्लाहुअन्हु से रिवायत है के तमाम अंसार में अबू तल्हा रज़िअल्लाहुअन्हु सब से ज़्यादा मालदार थे| वो तमाम माल और जायेदाद में बैरुहा नामी बाग़ को जो मस्जिद ए नबवी ﷺ के सामने था सब से ज़्यादा पसंद करते थे| नबी ﷺ भी अकसर उस बाग़ में जाया करते थे और उसके कुंवे का उम्दा पानी पिया करते थे| जब ये आयत नाज़िल हुई : जब तक तुम अपनी पसंदीदा चीज़ अल्लाह की राह में खर्च ना करोगे हरगिज़ भलाई ना पाओगे| (आले इमरान : 92)

अबू तल्हा रज़िअल्लाहुअन्हु ने हाज़िर होकर आप ﷺ से अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह ﷺ ! अल्लाह ताला इस तरह फरमाता है और मेरा सब से ज़्यादा अज़ीज़ माल यही बैरूहा नामी बाग़ है लिहाज़ा मैं इस उम्मीद में जो भलाई अल्लाह के पास है वही मेरे लिए जमा रहे, मैं बाग़ अल्लाह की राह में सद्खा करता हूँ| आप

ﷺ को इख्तियार है, जिस तरह चाहे इसको तख्सीम कर दें, आप ﷺ खुश होकर फरमाने लगे, वाह वाह, ये बहुत ही फाइदेमंद माल है, इससे लोगो को बहुत फ़ायदा होगा फिर फ़रमाया : अबू तल्हा मेरी राय ये है के तुम इस बाग़ को अपने रिश्तेदारों में तख्सीम करदो| अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह ﷺ ! बहुत अच्छा और फिर अपने रिश्तेदारों और भाईयों में तख्सीम कर दिया| (सहीह बुखारी : 2769, सहीह मुस्लिम : 998)

वाखिया बादलों को एक शख्स के बाग़ को सैराब करने का

एक मरतबा का वाखिया है के एक शख्स जंगल में जा रहा था, अचानक उसके कान में एक आवाज़ आई के कोई बादलो से कह रहा है : फलां के बाग़ को सैराब करो, उस बाग़ वाले का नाम भी लिया गया| चुनांचे उस बादल ने वहां से हट कर एक पथरीली ज़मीन पर जाकर

खूब मुसलाधार पानी बरसाया, वो पानी बह कर एक नहर में जा पहुंचा, ये शख्स उस पानी के साथ चला के देखे क्या माजरा है? वो नहर के किनारे चल कर एक बाग़ के पास पहुँच गया| ये पानी उस बाग़ में नालियों के ज़रिये पहुँच रहा था| जिस में एक शख्स पानी को इधर उधर कर रहा था| उस राहगीर ने उनसे दरयाफ्त किया के आप का नाम क्या है? उस शख्स ने वही नाम बताया जो उसने बादलों में सुना था| उस शख्स ने राहगीर से कहा : आप मेरा नाम दरयाफ्त क्यों कर रहे है? मुसाफिर ने कहा : मैं ने इस बादल में से जिस का ये पानी है एक आवाज़ सुनी के फलां शख्स के बाग़ को सैराब करो, उसने आप ही का नाम बताया था, वो बादल बरसा और पानी इस नहर में बहकर आया, इस अजीब व गरीब वाखिये की तलाश के लिए मैं पानी के साथ साथ आया, के मैं चलकर मालूम करूं के वो कौन है? लिहाज़ा अब आप मुझे बताइये के

ऐसा आप क्या करते है? उस शख्स ने कहा के जब आप ने दरयाफ्त कर ही लिया है तो सुनिये के इस बाग़ की पैदावार के मैं तीन हिस्से करता हूँ, एक हिस्सा अपने बच्चों के लिए और एक हिस्सा बाग़ के खर्च के लिए और एक हिस्सा अल्लाह ताला के रास्ते में खर्च कर डालता हूँ| इसलिए जब मेरे बाग़ को पानी की ज़रुरत होती है तो क़ुदरत की तरफ से इसका इंतज़ाम हो जाता है|

चैप्टर 6

दीन के अहम् और बुनयादी तालीमात

तौहीद

रिसालत

आखिरत

मुहम्मद ﷺ की मक्की ज़िंदगी के ये तीन बुनयादी दावती काम है|

Q 1) ईमान के कितने अरकान है?

A) ईमान के 6 अरकान है :

1. अल्लाह पर ईमान
2. फरिश्तों पर ईमान
3. किताबों पर ईमान
4. रसूलों पर ईमान
5. आखिरत के दिन पर ईमान
6. अच्छी और बुरी तख्दीर पर ईमान

Q 2) इस्लाम के कितने अरकान है?

A) इस्लाम के 5 अरकान है :

1. शहादह (अश हदु अल्लाह इलाहा इल्लल्लाह व अश हदु अन्न मुहम्मदुर रसूलुल्लाह)
2. सलाह
3. सौम
4. ज़काह
5. हज्ज

Q 3) अल्लाह ताला कहाँ है?

A) अल्लाह ताला अर्श पर मुस्तवी है|

Q 4) अल्लाह ने हमें किस लिए पैदा किया?

A) अल्लाह ने हमें उसकी इबादत करने के लिए पैदा किया है|

Q 5) तौहीद किसे कहते है?

A) अल्लाह ताला की ज़ात, नाम, सिफ़तें, काम, इबादत में किसी को शरीक ना करते हुए ये सारे हुखूख अल्लाह ही को अदा करना तौहीद कहलाता है|

Q 6) तौहीद की कितनी किस्में है?

A) तौहीद की तीन किस्में है :

1. तौहीद रुबूबियत

2. तौहीद उलूहियत

3. तौहीद अस्मा व सिफात

Q 7) सच्चे और आखरी रसूल का नाम क्या है?

A) सच्चे और आखरी रसूल का नाम मुहम्मद ﷺ है|

Q 8) आप ﷺ कहाँ पैदा हुए?

A) आप ﷺ मक्का में पैदा हुए|

Q 9) आप ﷺ के वालिद का नाम क्या है?

A) आप ﷺ के वालिद का नाम अब्दुल्लाह था|

Q 10) आप ﷺ के अम्मी का नाम क्या था?

A) आप ﷺ के अम्मी का नाम आमिनह था|

Q 11) आप ﷺ के दादा का नाम क्या था?

A) आप ﷺ के दादा का नाम अब्दुल मुत्तलिब था|

सवालात

असातेज़ा की आसानी के लिए मुन्दर्जा ज़ेल सवालात नमूने के तौर पर पेश किये जा रहे है| इसी से मिलते जुलते सवालात बच्चों के अंदाज़ में बच्चों की ज़हनी सतह का ख़याल

रखते हुए असातेज़ा इस पूरी किताब को उनके ज़हनों में पैवस्त करायें|

चैप्टर 1

सवालात बराये सूरतें

सूरह फातिहा
इस सूरत में कितनी आयतें है?
सूरह फातिहा में चौथी आयत का क्या तरजुमा है?
पूरी सूरत अपने मौल्लिम को सुनायें?
क्या आप ने घर में किसी को सूरह फातिहा सुनाई है?
मस्जिद में इमाम साहब सूरह फातिहा कब पड़ते है?
आप की मस्जिद में सूरह फातिहा सब से अच्छी लहन में कौन पढ़ते है?

सूरह इखलास
क्या आप ने सूरह इखलास याद की है?

सूरह इखलास की कोई एक फ़ज़ीलत बतायें?
सूरह इखलास में कितनी आयतें है?
पूरी सूरत का तरजुमा बतायें?

सूरह फलख
सूरह फलख मक्की है या मदनी है?
इस सूरत में कुल कितनी आयतें है?
पूरी सूरत का तरजुमा सुनायें?
सूरह फलख की फ़ज़ीलत क्या है?
इस सूरत का तरजुमा आप ने उर्दू में याद किया है या अंग्रेजी में?

सूरह नास
कुरआन में सूरह फलख शुरू में है, दरमियान में है या आखिर में है?
सूरह फलख और सूरह नास कब पढेंगे?
सूरह में “अन्नास” का लफ्ज़ कितनी मरतबा आया है?
सूरह नास का तरजुमा सुनायें?

चैप्टर 2

सवालात बराये अहादीस

इस बाब में कुल कितनी अहादीस बयान की गयी है?

“नमाज़ नूर है” इस हदीस का हवाला क्या है?

“पाकी ईमान का हिस्सा है” ये हदीस अरबी में सुनायें?

क्या मुसलमान मुसलमान का भाई है? इसके लिए कौनसी हदीस है?

“गुस्सा ना करो” इसके बारे में कोई हदीस आप ने याद की है?

ज़बान की हिफाज़त का मतलब क्या है?

चैप्टर 3

सवालात बराये इस्लामी आदाब

मुलाक़ात करते वक़्त क्या कहें?

सलाम का जवाब कैसे दें?

मिठाई खाते वक़्त क्या पढ़ें?

Ice cream खाते वक़्त क्या पढ़े?

क्या चाकलेट खाने से पहले भी बिस्मिल्लाह बोलना होगा?

जब आप कुछ भी खालें तो क्या पढ़ें?

हमारा कलिमा क्या है?

कोई चीज़ आपको पसंद आये तो क्या पढ़ें?

“बारकल्लाह” कब पढ़ें?

“माशाअल्लाह” कब कहें?

अगर आप को कुछ दिया जाये तो आप क्या कहेंगे?

स्कूल में किसी ने आप को लिखने के लिए पेंसिल दिया तो आप क्या कहेंगे?

किसी ने आप को स्कूल में कोई खाने की चीज़ दी तो आप क्या कहेंगे?

अगर आप कुछ ग़लत काम करे तो क्या कहेंगे?

सोने से पहले क्या पढ़ें?

सोते वक़्त की दुआ सिर्फ रात में पढ़ना है या जब भी सोयें पढ़ना है?

सोकर उठने के बाद क्या पढेंगे?

बैतुल खला में जाने से पहले क्या पढेंगे?

बैतुल खला से निकलते वक़्त क्या पढेंगे?

आप में से किस किस ने घर वालो को दुआ सुनाई है?

सवालात बराये नसीहतें

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटों को क्या नसीहत की?

रसूलुल्लाह ﷺ ने अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़िअल्लाहुअन्हु को किस बात की नसीहत की थी?

अगर अल्लाह किसी को फ़ायदा पहुँचाना चाहे तो क्या कोई उसको नुक्सान पहुंचा सकता है?

मदद किससे मांगे?

अल्लाह हम को कब याद रखेगा?

सवालात बराये खिसस

अल्लाह ताला ने आदम अलैहिस्सलाम को सब से पहले क्या सिखाया?

फरिश्तों को आदम अलैहिस्सलाम के सामने सजदा करने का हुकुम क्यों दिया गया?

किसने सजदा नहीं किया?

कौनसे सहाबी ने अपना बग़ीचा अल्लाह की राह में खर्च किया?

सहाबी ने अपना बग़ीचा किन लोगो के दरमियान खर्च किया?

जिस आदमी के खेत में बादल ने बारिश बरसाई वो क्या करता था?

जंगल में चलने वाले आदमी ने बादल से क्या आवाज़ सुनी?

अल्लाह किन लोगो की मदद करता है?

सवालात बराये दीन की बुनयादी तालीमात

ईमान के कितने अरकान है?

इस्लाम के कितने अरकान है?

अल्लाह कहाँ है?

अल्लाह ने हमें क्यों पैदा किया है?

तौहीद किसे कहते है?

तौहीद की कितनी किस्में है?

आखरी नबी का नाम क्या है?

हमारे नबी कहाँ पैदा हुए?

हमारे नबी के अब्बू का नाम क्या था?

हमारे नबी के अम्मी का नाम क्या था?

तौहीद, रिसालत, आखिरत की अहमियत बतायें?

मुख़्तसर अनावीन पर तखारीर सुनायें?

A) **तौहीद**

B) **मुहम्मद ﷺ का बचपन कैसा था**

C) **आखिरत में कौन कामयाब और कौन नाकाम**

D) **कुरआन याद करने और समझकर पढने की अहमियत**

E) **हदीस याद करने और समझकर पढने की अहमियत**

F) **आदाब व तहज़ीब इस्लामी की कुछ मिसालें**

G) **बड़ों का अह्तेराम**

H) **माँ बाप का अह्तेराम**

I) **मिल जुल कर खाने, पीने, खेलने और पढने की अहमियत**

J) **झूठ का बुरा अंजाम**

K) **शरारत का बुरा अंजाम**

L) **बदतमीज़ी का बुरा अंजाम**

M) **सच की मिठास**

N) **अच्छे बच्चे के औसाफ**

O) **सहाबा का बचपन**

P) **गरीबों की मदद**

Q) **दुआ की अहमियत**

R) **मुख्तलिफ दुआयें और अज्कार सुनायें**

S) **अच्छी लहन में कुरआन सुनायें**

T) **अरबिक स्टाइल में कुरआन सुनायें**

U) **माहेर खतीबाना अंदाज़ में किस्सा सुनायें**

V) **ड्रामाई अंदाज़ में आदाब बयान करें (दो तीन बच्चे मिलकर)**

W) दो बच्चे मिलकर एक दूसरे को नसीहत वाला एक मुकालमा बनायें

X) उस्ताज़ और मौल्लिम की अहमियत पर तक़रीर करें

Y) इल्म, मदरसा और स्कूल की अहमियत

Z) छोटे बच्चे अपनी हिफाज़त कैसे करें

मौल्लिम गाइड

हर किताब के लिए दो साल की मुद्दत है, जिसमे उसे पढ़ना है| एक किताब के लिए दो साल लगने की कुछ ख़ास वजूहात है, जिनको आप के सामने रखने जा रहे है| चूंके ये किताबें सबाही मसाई मदारिस का ख़याल रख कर बनायी गयी, जहाँ बच्चा अपना पूरा वक़्त नहीं देता, बलके ज़िमनी वक़्त देता है| इसीलिए लम्बा वक़्त दरकार है| पूरी किताब 6 अबवाब में तकसीम की गयी है| हर बाब में कुछ ख़ास बातें है

जिनके हुसूल के लिए किताब तरतीब दी गयी है|

रहनुमाई बराये मौल्लिमीन, मौल्लिमात व सरपरस्त

इन दो सालों में क्या ------- हासिल किये जा सकते है?

हर दिन सूरतें, अहादीस और आदाब में से एक एक चीज़ लेकर याद दिलायें|

एक एक आयत का इंतेखाब करे|

तरजुमा हर दिन एक एक आयत का याद दिलायें|

बच्चा जिस ज़बान को अच्छा जानता हो उस ज़बान में पहले याद दिलायें|

बच्चे को मानी समझायें|

एक बाब ख़तम होने के बाद ही दूसरे बाब का आग़ाज़ करें, बलके हर दिन कुछ न कुछ आदाब की बातें लेते रहे ताके मुख्तलिफ चीज़ें एक साथ चलती रहे|

हर हफ़्ता आमोख्ता याद दिलायें|

अगर मुमकिन हो तो हर हफ़्ता एक ---------- बनायीं जाये, इस हफ्ते में जो कुछ याद किया गया है उसको ------ में दोहराये| हर दिन क्लास के आखिर में एक बच्चे के ज़रिये आयत का टुकड़ा या अहादीस का टुकड़ा इज्तेमाई तौर पर दोहराया जाये|

हर बच्चे पर खुसूसी तवज्जो दी जाये|

हर एक की अलग अलग रिपोर्ट तैयार की जाये|

बच्चों को activities base पर पढ़ाया जाये : जैसे कभी कार्ड बोर्ड पर बादल उतारें, दुआ लिखायें, कभी खाने की टेबल उतारें, खाने की दुआ लिखें, कभी पानी का ग्लास उतारें, उस पर दुआ लिखायें वगैरा|

अमली मश्क भी करायें : जैसे क्लास में किसी बच्चे को अमली तौर पर सोने की मश्क करायें, दुआ का मश्क करायें| किसी बच्चे से वजू की अमली मश्क करायें वगैरा|

बराये कुरआन

तजवीद : सब से पहले तजवीद सीखें ताके बच्चा पढ़ना और दोहराना सीखें और तलफ्फुज की अदायगी उन्दह हो|

नाज़ेरह में रवानी पैदा हो|

हिफ्ज़ कमा हक्क़ हो|

हिफ्ज़ तरजुमा स लिसानी|

किसी भी माहेर क़ारी के लहन की आदत डालें|

बच्चे की आवाज़ को रिकॉर्ड करें ताके बच्चा अपनी आवाज़ सुने जिससे उसकी मज़ीद हिम्मत अफज़ाई होती रहे|

बराये अहादीस

अरबी ज़बान पढने का तलफ्फुज़ उन्धा किया जाये|

हिफ्ज़ अहादीस

तरजुमा सी लिसानी

पहले हिस्से में बच्चों की उमर का लिहाज़ रखते हुए दो लफ्ज़ी अहादीस को लाया गया है| इसके बाद वाली किताबों में तीन लफ्ज़ी और इसी तरह...|

बराये दुआयें

हिफ्ज़ -----

आदाब

दुआओं का इस्तेमाल

तरजुमा अहादीस मा हवालात|

किसी न किसी ----- या जुलूस में पेश करने के लिए काम आएगा|

बराये नसीहतें

ऐसी ख़ास नसीहतें जो नबी ﷺ ने बच्चों को की थी| इन -------- में तौहीद और तवक्कल का दर्स दिया गया है|

बराये किसस

हमारे माशरे में झूठे किसस का सहारा लिया जाता है, इसलिए सालेह व सालिम ---- का इंतेखाब किया गया है|

बराये दीन के अहम् और बुनयादी तालीमात

तौहीद, रिसालत और आखिरत के मसायेल का तज़किरह किया गया है|